भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, खंडवा रोड, इन्दौर-452001

फ़ाइल् क्रमांक. प्रेस नोट/प्रेस व पब्लिसिटी/2022/54

डॉ के.एच. सिंह बने भारतीय सोयाबीनअनुसंधान संस्थान, इंदौर के नियमित निदेशक, 31 अक्टूबर से संभाला पदभार

इंदौर, मध्य प्रदेश . राई-सरसों जैसी महत्वपूर्ण तिलहनी फसल के प्रजनक डॉ के.एच. सिंह नें भा.कृ.अनु.प-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर का बतौर निदेशक पदभार संभाला। ज्ञात हो कि लगभग 2 वर्षों के अंतराल के बाद भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर के नियमित निदेशक का पद पुनः स्थापित हुआ है। संस्थान के कर्मचारियों द्वारा नवनियुक्त निदेशक महोदय डॉ के.एच. सिंह के लिए आयोजित स्वागत समारोह के अवसर पर अपने उद्बोधन में डॉ सिंह ने कहा – मैं इस संस्थान से जुड़ कर गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ और इसके लिए मैं कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल का आभार व्यक्त करता हूँ , कि उन्होंने मुझे इस शीर्षस्थ संस्थान का पदभार सँभालने का अवसर प्रदान किया और में संस्थान के सभी कार्मिकों को आश्वासन देता हूँ कि हम सब कंधे से कन्धा मिलाकर कार्य करेंगे और सोयाबीन फसल के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देंगे । इस समारोह में संस्थान के विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्षों नें माननीय निदेशक महोदय का स्वागत किया एवं शुभकामनाएं दी। इससे पूर्व डॉ सिंह नें भरतपुर (राजस्थान) स्थित राई-सरसों अनुसंधान निदेशालय में 1997 से विभिन्न पदों पर कार्य किया है। प्रजनक के रूप में अपने 25 वर्षों के लंबे वैज्ञानिक कार्यकाल के दौरान, उन्होंने हाइब्रिड सरसों एनआरसीएचबी 506 सहित सरसों की कई किस्मों को विकसित किया है जिसे किसान समुदायों द्वारा बहुत सराहा गया है। डॉ सिंह सरसों की सबसे लोकप्रिय और उल्लेखनीय किस्मों "एनआरसीएचबी 101", "गिरिराज" और "बृजराज" के जनक हैं, जिन्हें राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तर-पूर्वी पहाड़ी क्षेत्र और दक्षिणी राज्यों के किसानों द्वारा व्यापक रूप से अपनाया गया। कार्यक्रम में "सतर्कता जागरूकता सप्ताह" का उद्घाटन भी किया गया जिसमें डॉ सिंह ने संस्थान के कर्मचारियों को सत्यनिष्ठा की शपथ के साथ-साथ एकता की शपथ दिलाई।